

# देश, समाज, धर्म और संरकृति की रक्षा के लिए जनजातीय समाज के नायक-नायिकाओं ने अपना सर्वस्व योगदान दिया: किरण देव

जगदलपुर, 19 नवंबर (देशबन्धु)। शहीद महेंद्र कर्मा विभिन्न विद्यालय में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भगवान विरसा मुण्डा की जयंती के उपलक्ष्य में हुए इस कार्यक्रम में स्थानीय शहीदों का नाम होगा। प्रमुख वक्ता सतीश गोकुल पांडा ने भगवान विरसा मुण्डा, तिलका पांडी के बलिदानों और मानगढ़ की पहाड़ी के संघर्षों को याद दिलाते हुए कहा कि इतिहास में रानी दुर्गा वती ने स्वाभियान के लिए संघर्ष किया। रानी दुर्गावती ने मुगलों को छोटी शर्त भी नहीं मानी। उन्होंने सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था भी दी थी। कार्यक्रम के प्रमुख वक्ता श्री पांडा ने कहा कि अतीत में जनजातीय समाज ने अंग्रेजों को सबसे अधिक हानि पहुंचाया। इस समाज के



जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम

इस अवसर पर मुख्य अतिथि किरण सिंह देव ने कहा कि अतीत में जब-जब देश, समाज, धर्म और संस्कृति को रक्षा के लिए संघर्ष की जरूरत थी जनजातीय समाज के नायक-नायिकाओं ने अपना सर्वस्व योगदान दिया। सन् 1774 से 77 के बीच शहीद अंगमर मिंह ने समाज और देश के लिए अविस्मरणीय संघर्ष किया। ऐसे कई नायकों को हम नहीं जानते हैं जिन्हें जानना जरूरी है। हम क्या थे, हमारे पूर्वज, विरासत, संस्कृति क्या थी इसे जानना आवश्यक है। श्री देव ने बताया कि पिछले 15 नवंबर को केंद्र सरकार के मार्गदर्शन में देश के पांच सौ

वीरों ने कभी अंग्रेजों के सामने घुटने नहीं टेके। लेकिन आजादी के बाद भी इस समाज को देखने की अंग्रेजियत दृष्टि बची है। इस जीवंत समाज को देखने समझने

के लिए प्रयत्नियम और सिनेमा का सहारा। से ने कि नकारात्मक प्रग्राम करते हैं। आज भी जनजातीय समाज की न्याय व्यवस्था सरल है। यह समाज एक के लिए सब के भाव से जीता है। हम सबक। मूल जनजातीय समाज होते हैं।

उपस्थित युवाओं को प्रेरित करने के लिए विश्व के प्रख्यात विद्यि के रिसर्च का जिक्र करते हुए श्री पांडा ने कहा कि आज हमारे जीवन में पढ़ाई का साढ़े 12 प्रतिशत ही योगदान होता है और आत्मविधास, कम्युनिकेशन जैसे सॉफ्ट स्किल का योगदान साढ़े 87 प्रतिशत रहता है। इसलिए हमें सॉफ्ट स्किल पर भी

विशेष ध्यान देना चाहिए।

पूर्व विभाषक राजाराम तोड़म ने कहा कि इतिहास में जितना स्थान जनजातीय समाज को मिलना चाहिए उतना नहीं मिला है। समाज की अच्छाईयों पर हमें ध्यान साकरना चाहिए। डॉ. गंगाधार कश्यप ने कहा कि यह जनजातीय समाज संस्कृति के मामले में बहुत ही समृद्ध है। इसमें द्युआदृत जैसी सामाजिक समस्याएं नहीं हैं। इसमें पूर्ण अपने स्वागत उद्धारण में बहुलप्ति प्रो. श्रीवामावने कहा कि भगवान विरसा मुण्डा एक सोच और विचारधारा थे। जिन्हें समाज ने भगवान के रूप में चिन्हित किया। हम भगवान विरसा के जीवन के जितने पत्ते पलटने उतने बें हमारे हृदय में उतरेंगे। जब अंग्रेज सर्वस्व लूट रहे थे तो भगवान विरसा ने अनुलोदी प्रतिकार किया। प्रो. श्रीवामावन ने बताया कि केंद्र सरकार के मार्गदर्शन में जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों में होने वाले विमर्श में जनजातीय युवाओं में आत्मविधास जारीगा। इस अवसर पर जनजातीय समाज के प्रमुखों का २५ शेष पृष्ठ १ पर

## देश, समाज, धर्म और संस्कृति ...

शाल व श्रीफल से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम समन्वयक डॉ. सजीवन कुमार एवं डॉ. दिलेश जोशी ने किया। आभार प्रदर्शन कुलसचिव डॉ. राजेश लालवानी ने किया। कार्यक्रम में पप्पुराम नाग, रतन कश्यप, लोकनाथ नाग, जगदीश मौर्य, हिड़मा मंडावी, एसएन सेवता, बाबूलाल बघेल, हरिप्रसाद पत्रा, दशरथ कश्यप सहित विवि के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. शरद नेमा, डॉ. स्वप्न कुमार कोले, डॉ. आनंद मूर्ति मिश्रा, डॉ. सुकीर्ति तिकों, डॉ. विनोद कुमार सोनी एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे।

आयोजन

जनजातीय समाज को देखने समझने के लिए म्यूजियम और सिनेमा का सहारा लेने का नकारात्मक प्रयास है

# हम, हमारे पूर्वज, विरासत, संस्कृति क्या थी यही बताता है गौरव दिवस



पत्रिका न्यूज नेटवर्क  
patrika.com

जगदलपुर, शहीद महेंद्र कर्मा विद्यविद्यालय में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भगवान विरसा मुण्डा की जयती के उपलक्ष्य में हुए इस कार्यक्रम में विधायक किरण मिह देव, महारोर मर्फीया माहू, पदमश्री धरमपाल मेनी, कुलपति प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव एवं जनजातीय समाज के प्रमुख उपस्थित रहे।

इस अवमर पर मुख्य अधियिकिरण मिह देव ने कहा कि अलीत में जब-जब देश, समाज, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष की ज़रूरत थी जनजातीय समाज के नायक-नायिकाओं ने अपना सर्वस्य



जगदलपुर, शहीद महेंद्र कर्मा विद्या में हुए आयोजन में मौजूद वक्ता।

योगदान दिया। मन् 1774 से 77 के शीन शहीद अजमेर मिह ने समाज और देश के लिए अधिकारणीय मंथर्य किया। ऐसे कई नायकों को हम नहीं जानते हैं जिन्हें जानना ज़रूरी है। हम क्या थे, हमारे पूर्वज, विरासत, संस्कृति क्या थी इसे

जानना आवश्यक है।

प्रमुख वक्ता सर्वीश गोंकुल पांडा ने कहा कि द्वितीय में रानी दुर्गावती ने स्वाभियान के लिए मंथर्य किया। रानी दुर्गावती ने मुगलों की छोटी शर्त भी नहीं मानी। उन्होंने सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था भी दी थी।

## हमें सॉफ्ट स्किल पर विशेष ध्यान देना चाहिए

पूर्व विधायक श्री राजाराम लोड़ेम ने कहा कि समाज की अचाईयों पर हमें भरोसा करना चाहिए। डॉ. गंगाराम कश्यप ने कहा कि यह जनजातीय समाज संस्कृति के मामले में बहुत ही समृद्ध है। इसमें धूआँट जैसी सामाजिक सापरस्याएं नहीं हैं। कुलपति प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि भगवान विरसा मुण्डा एक सोच और विचारधारा थे। जिन्हें

समाज ने भगवान के रूप में चिह्नित किया। हम भगवान विरसा के जीवन के जितने पन्ने पलटेंगे उन्हें वे हमारे हृदय में उतरेंगे। जब अंगेज सार्वस्व लूट रहे थे तो भगवान विरसा ने अतुलनीय पत्रिकार किया। प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि केंद्र सरकार के मार्गदर्शन में जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम किए जा रहे हैं।

## जनजातीय समाज की न्याय व्यवस्था सबसे सरल

श्री पांडा ने कहा कि अलीत में जनजातीय समाज ने आयोजों को सबसे अधिक हानि पहुंचाया। इस समाज के लोरों ने कभी अंगेजों के रामने धूटने नहीं टेके। लेकिन आजादी के बाद भी हरा समाज को देखने की अंगेजियत हटा दी गयी है। इस जीवंत समाज को देखने समझने के लिए म्यूजियम और सिनेमा का सहारा लेने का नकारात्मक प्रयास करते हैं। आज भी जनजातीय समाज की न्याय व्यवस्था सरल है।

## यह रहे मौजूद

कार्यक्रम में पंचुराम नाग, रत्न कश्यप, लोकनाथ नाग, जगदीश मौर्य, हिङ्गा मंडावी, एसाएन सेवता, शाकुलाल बधेल, हरिप्रसाद पन्ना, दशरथ कश्यप सहित विवि के वरिष्ठ प्राच्यांगक डॉ. शरद नेमा, डॉ. स्वामन कुमार कोले, डॉ. आनंद मूर्ति मिश्रा, डॉ. सुकीर्ति तिकी, डॉ. विनोद कुमार सोनी एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपरिक्षेत्र ये सचालन कार्यक्रम समन्वयक डॉ. राजीवन कुमार एवं डॉ. दिलेश जोशी ने किया। आभार कुलसंघिय डॉ. राजेश लालवानी ने किया।



Scanned with OKEN Scanner

रामक विवि में जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम का आयोजन

# जनजातीय जन नायकों का त्याग अविस्मरणीय : किरण

नवभारत रिपोर्टर। जगदलपुर।

शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में मंगलवार को जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि किरण सिंह देव ने कहा कि अतीत में जब-जब देश, समाज, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष की ज़रूरत थी, जनजातीय समाज के नायक-नायिकाओं ने अपना सर्वस्व योगदान दिया। सन् 1774 से 77 के बीच शहीद अजमेर सिंह ने समाज और देश के लिए अविस्मरणीय संघर्ष किया। ऐसे कई नायकों को हम नहीं जानते हैं जिन्हें जानना ज़रूरी है।

भगवान विरसा मुण्डा की जयंती के उपलक्ष्य में हुए इस कार्यक्रम में स्थानीय विधायक किरण सिंह देव, महापौर सफोरा साहू, पदमश्री धर्मपाल सैनी, कुलपति प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव एवं जनजातीय समाज के प्रमुख उपस्थित रहे। इस अवसर पर श्री देव ने कहा कि हम क्या थे, हमारे पूर्वज, विरासत, संस्कृति क्या थी इसे जानना आवश्यक है। श्री देव ने बताया कि पिछले 15 नवंबर को केंद्र सरकार के मार्गदर्शन में देश के पांच सौ जिले में भगवान विरसा मुण्डा की जयंती मनाई गई। अब हमारे सिलेबस में भी जनजातीय शहीदों का नाम होगा। स्वागत उद्बोधन में कुलपति प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि भगवान विरसा मुण्डा एक सोच और विचारधारा थे, जिन्हें समाज ने भगवान के रूप में चिन्हित किया। हम भगवान विरसा के जीवन के जितने पन्ने पलटेंगे उतने वे हमारे हृदय में उतरेंगे। जब अंग्रेज सर्वस्व लूट रहे



## जनजातीय समाज हम सबका मूल : पण्डि

प्रमुख वक्ता सतीश गोकुल पांडा ने कहा कि अतीत में जनजातीय समाज ने अंग्रेजों को सबसे अधिक हानि पहुंचाया। इस समाज के बीरों ने कभी अंग्रेजों के सामने घुटने नहीं टेके। लेकिन आजादी के बाद भी इस समाज को देखने को अंग्रेजियत दृष्टि वाली है। इस जीवंत समाज को देखने समझने के लिए व्यूजियम और सिनेमा का सहाग लेने का नकारात्मक प्रयास करते हैं। आज भी जनजातीय समाज को न्याय व्यवस्था सरल है। यह समाज एक के लिए सब के भाव से जीता है, हम सबका मूल जनजातीय समाज ही है।

थे तो भगवान विरसा ने अतुलनीय प्रतिकार किया। पूर्व विधायक श्री राजाराम तोड़ेम ने कहा कि इतिहास में जितना स्थान जनजातीय समाज को मिलना चाहिए उतना नहीं मिला है। समाज की

## जनजातीय समाज प्रमुखों का किया गया सम्पादन

इस अवसर पर जनजातीय समाज के प्रमुखों का शाल व श्रीफल से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम समन्वयक डॉ. मर्जीवन कुमार एवं डॉ. दिलेश जोशी ने किया। आभार प्रदर्शन कुलसचिव डॉ. राजेश लालवानी ने किया। कार्यक्रम में पप्पुराम नाग, गंगाराम कश्यप, रतन कश्यप, लोकनाथ नाग, जगदीश मौर्य, हिडमा मंडावी, एमएन सेवता, बाबूलाल बघेल, हरिप्रसाद पन्ना, दशरथ कश्यप सहित विवि के वरिष्ठ प्राच्यापक डॉ. शरद नेमा, डॉ. स्वप्न कुमार कोले, डॉ. आनंद मूर्ति मिश्रा, डॉ. सुकीर्ति तिक्की, डॉ. विनोद कुमार सानी एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे।

अच्छाईयों पर हमें भरोसा करना चाहिए। डॉ. गंगाराम कश्यप ने कहा कि यह जनजातीय समाज संस्कृति के मामले में बहुत ही समृद्ध है। इसमें छूआछूत जैसी सामाजिक समस्याएं नहीं हैं।

# जनजातीय समाज के वीरों का योगदान अविस्मरणीय

भागवन विरसा मुण्डा | जगदलपुर

भागवन विरसा मुण्डा की जयंती के उपलक्ष्य में बस्तर विश्वविद्यालय में मंगलवार को जनजातीय गैरव दिवस कार्यक्रम हुआ। इसमें स्थानीय विधायक, महापौर सफोरा सहू, पश्चिमी धरमपाल सैनी, कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव व जनजातीय समाज के प्रमुख उपस्थित रहे। अतिथियों ने कहा कि अतीत में जब-जब देश, समाज, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष की ज़रूरत थी जनजातीय समाज के नायक-नायिकाओं ने सर्वस्व योगदान दिया। 1774 से 77 के बीच शहीद अजमेर सिंह ने समाज और देश के लिए अविस्मरणीय संघर्ष किया। ऐसे कई नायकों को हम नहीं जानते हैं जिन्हें जानना ज़रूरी है। हम क्या थे, हमारे पूर्वज, विरासत, संस्कृति क्या थी



जगदलपुर। कार्यक्रम में शामिल होने के लिए पहुंचे अतिथि।

इसे जानना आवश्यक है। वक्ता सतीश गोमुख पांडा ने भगवन विरसा मुण्डा, तिलका मांझी के बलिदानों और मानगढ़ की पहाड़ी के संघर्षों को यदि दिलाते हुए कहा कि इतिहास में रानी दुर्गावती ने स्वाभिमान के लिए संघर्ष किया। रानी दुर्गावती ने मुहलों की छोटी शर्त भी नहीं मानी। उन्होंने सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था भी दी थी। पांडा ने

कहा कि जनजातीय समाज ने औजों को सबसे अधिक स्फुरि पहुंचाई। इस समाज के वीरों ने कभी औजों के सामने छुटने नहीं टेके, लेकिन आजादी के बाद भी इस समाज को देखने की औरंगियत दृष्टि बची है। इस जीवंत समाज को देखने समझने के लिए घृजियम और सिनेमा का सहारा लेने का नकारात्मक प्रयास करते हैं। आज

कुलपति बोले- विरसा मुण्डा एक सोच विचारधारा थे

कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि भगवन विरसा मुण्डा एक सोच और विचारधारा थे, जिन्हें समाज ने भगवन के रूप में चिन्हित किया। हम भगवन विरसा के जीवन के जितने पन्ने फलटेंगे उतने वे हमारे हृदय में ढरेंगे। जब अग्रेज सर्वस्व लूट रहे थे तो भगवन विरसा ने अतुलनीय प्रतिकार किया। प्रो.

श्रीवास्तव ने बताया कि केंद्र सरकार के मार्गदर्शन में जनजातीय गैरव दिवस कार्यक्रम किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों में होने वाले विमर्श से जनजातीय युवाओं में आत्मविकास जाएगा।

भी जनजातीय समाज की न्याय व्यवस्था सरल है। यह समाज एक के लिए सब के भाव से जीता है।



Scanned with OKEN Scanner